प्रातः सभा 7-8-68 ओमशान्ति पिताश्री शिव बाबा याद है?

ओमशान्तिः बाप कहा जाताहै करन-करावनहार। तुम साहबज़ादों को भी समझना चाहिए, क्योंकि इस सृष्टि में तुम ऊंच ते ऊंच हो। तुम साहबज़ादों का कितना ऊंच पोजीशन है। हम साहबज़ादे हैं, हम साहब के मत पर फिर से अपना राज्य स्थापन कर रहे हैं। यह भी सभी की बुधि में याद नहीं रहता। बाबा सभी सेन्टर्स के बच्चों के लिए कहते हैं। अनेक सेन्टर्स हैं। बुधि में यह सदैव याद रहे हम बाबा की श्रीमत पर फिर से विश्व में सुख शान्ति का राज्य स्थापन कर रहे हैं। सुख और शान्ति। दो अक्षर याद करनी है। तुम बच्चों को कितना ज्ञान मिलता है। बुधि कितनी विशाल होनी चाहिए। जामरी बुधि थोड़े ही चल सकते। अपन को साहबज़ादे समझो तो भी पाप भस्म हो जाये। बहुत हैं जिनको सारा दिन बाप की याद नहीं रहती है। हम साहबज़ादे हैं वह भी याद नहीं रहता। स्टुडन्ट्स तो जानते हैं ना हमको कौन सा टीचर पढ़ाते हैं। तुम्हारी डम बुधि क्यों हो जाती। सेन्टर्स पर ऐसे 2 रहते हैं जिनकी बुधि में है ही नहीं कि हम श्रीमत पर विश्व में राज्य स्थापन कर रहे हैं। अन्दर में वह नशा पक्का होनी चाहिए। बाहर की बात ही नहीं। मुरली सुनने से ही रोमांच खड़ी हो जानी चाहिए। यहां तो बाप देखते हैं बच्चों की ओर ही रोमांच डेड रहती है। बहुत हैं बच्चे हैं जिनकी बुधि में यह याद नहीं रहता। हम श्रीमत पर बाबा का याद से विकर्म विनाश कर हम अपनी राजधानी स्थापन कर रहे हैं। तुमको रोज बाबा समझाते हैं तुम वारियर्स हो। रावण पर जीत पाने वाले हो। तुम बच्चे ही जानते हो। बन्दर बुधि को ही बाप मंदिर लायक बनाते हैं। परन्तु इतनानशा वह खुशी थोड़े ही हैं। कोई चीज़ न मिली तो बस, माया के जंजीर में फंस पड़ते हैं। तुम्हारा मान, तुम्हारा कारोबार तुम्हारी खुशी तो वन्डरफुल होनी चाहिए। क्या2 किचड़ा इकट्ठा करते रहते हैं। मित्र-सम्बन्धियों को भी नहीं भूलते हैं। वह क्या बाप को याद करेंगे। कोई चीज़ न मिली तो रो पड़ेंगे। बाबा को वन्डर लगता है बच्चों की अवस्था पर। चने न मिले, आचार न मिली तो बस। वह क्या पद पावेंगे। वन्डर लगता है। तुम बच्चों को तो बहुत खुशी होनी चाहिए। अपन को साहबज़ादे समझो तो कुछ कुछ भी मांगने की प्रवाह न रहे। बाबा तो हमको इतना अथाह खज़ाना देते हैं जो 21 जन्म कोई कुछ भी मांगने का नहीं है। इतना नशा रहना चाहिए। परन्तु बिल्कुल ही डम जामरी बुधि हैं। 7फीट बुधि होनी चाहिए। मनुष्य की लम्बाई 6-8 फुट होती है। बाप कितना बच्चों को हुलास में लाते हैं। तुम साहबज़ादे हो। दुनिया के मनुष्य तो बिल्कुल ही जंगली लोग हैं। राकास-वाकास, हिरण्य-कश्यपु जैसे दैत्य हैं। उनको तुम समझाते हो। सिर्फ तुम यह समझो हम बाप के सामनेबैठे हैं। बाप को याद करते रहेंगे तो विकर्म विनाश होंगे। बाप समझाते हैं बच्चे माया तुम्हारा बहुत कड़ा दुश्मन है। और का इतना दुश्मन नहीं है जितनाकि तुम्हारा। वह तो जानते ही नहीं तुच्छ बुधि हैं। आसुरी बुधि कहा जाता है। बाबा रोज2 तुम बच्चों को उठाने लिए समझाते रहते हैं। तुम साहबज़ादे हो। बाप को याद करो और दूसरों को भी आप समान बनाते रहो। तुम हंसी-खुशी में यहभी समझा सकते होभगवान तो सच्चा साहब मालिक है ना। तो हम उनके बच्चे साहबज़ादे ठहरे ना। चलते-फिरते बुधि में यहा याद रहे। सर्विस में दधीची ऋषि मिसल हड्डियां भी दे देनी है। यहां हड्डी देना तो क्या, और ही अथाह सुख उन्हों को चाहिए। तबीयत कोई इन चिज़ों से थोड़े ही अच्छी होती है। तबीयत के लिए तो चाहिए याद की यात्रा। वह खुशी रहनी चाहिए। और हम तो कल्प2 माया से हराते हैं। फिर जीत पहनते हैं। बाप आकर जीत पहनाते हैं। अभी भारत में कितना दुःख है। अथाह दुःख आने वाला है। वहलोग तो समझते हैं ऐरोपलेन है मोटरें हैंमहल हैं, बस यही स्वर्ग है। यह नहीं समझते यह तो दुनिया ही खलास होनी है। लाखों-करोड़ों खर्चा करते रहते हैं। डेम्स आद बनाने। लड़ाई का समान भी कितनाले रहे हैं। एक दो को खत्म ही करने वाले हैं। निधणके हैं ना। कितना लड़ते झगड़ते हैं। बात मत पूछो। सभी तरफ किचड़ा लगा पड़ा है। इनको कहा जाता है नर्क। स्वर्ग की तो बड़ी महिमा है। बरोदा के महारानी से तुमपूछो महाराजा कहां? कहेंगे स्वर्ग वासी हुआ। स्वर्ग किसको कहा जाता है यह भी कोई नहीं जानते। कितना घोर अंधियारे में हैं। तुम भी घोर अंधियारे में थे। अभी बाप कहते हैं

हैंहम तुमको ईश्वरीय बुधि देता हूं। अपन को ईश्वरीय सन्तान साहबज़ादे समझो। साहब पढ़ाते हैं शाहज़ादे बनाने लिए। बाबा पहाका(कहावत) सुनाते थेना रिढ छा जाने ... अभी तुम समझते हो मनुष्य सभी रिढ बकरियां हैं। कुछ भी नहीं जानते। क्या2 बैठ उपमा करते हैं। शास्त्रों की टांटां करते रहते हैं। जैसे मेढकों की महफिल होती है। कुछ भी नहीं समझते। तुम्हारी बुधि में आदी मध्य अन्त का सभी राज़ है। यह अच्छी रीत याद करो हम विश्व में सुख-शांति की स्थापना कर रहे हैं। जो मददगार बनेंगे वही ऊंच पद पावेंगे। वह भी तुम देखते हो कौन2 मददगार बनते हैं। अपने दिल से हरेक पूछे हम क्या कर रहे हैं। हम तो रीढ बकरियां हैं। अहंकार कितना रहता है। गुरर2 करने लग पड़ते हैं। तुमको तो बाप की याद में रहना चाहिए। सर्विस में हड्डियां देनी है। हरामज़ादे, साहबज़ादे, और शाहज़ादे। बाबा ने तीनों बात अर्थ सहित समझाई है। ऊंच पद पाना है तो हड्डियां दे सर्विस करनी है। बाबा सभी सेन्टर्स के बच्चों से बात कर रहे हैं। जितना हो सके सर्विस में हड्डियां देनी है। किसको नाराज़ न करना है। न होना है। अहंकार भी न आना चाहिए। हम यह करते हैं, हम इतने होशियार हैं। यह भी देह-अभिमान है। देह-अभिमानी को हरामज़ादे ही कहते हैं। उनकी चलन ही ऐसी चलती हैजो शर्म आ आ जावेगा। नहीं तो तुम्हारे जैसा सुख और कोई को हो न सके। किंग-क्वीन आद सभी मर जाने वाले हैं। यह बुधि में याद रहे तो भी तुम चमकते रहो। सेन्टर्स में कोई अच्छा महारथी हैं, कोई घोड़सवार भी हैं। उनमें बड़ी विशाल बुधि होनी चाहिए। कैसी2 ब्राहमणियां हैं। कोई तो बहुत ही मददगार हैं। सर्विस में कितने खुश रहते हैं। रचयिता बाप और रचना के आदि मध्य अन्त को रीढ बकरियां क्या जाने। तुमको कितना नशा चढ़ना चाहिए। सर्विस बिगर क्या पद पावेंगे। बाप को तो बच्चों के लिए रिगार्ड रहता है ना। परन्तु वह अपना खुद ही रिगार्ड नहीं रखते। तो बाबा क्या कहेंगे। थोड़ा ही बाप का संदेश देना है। बाप कहते हैं मन्मनाभव बस। गीता में भी कुछ अक्षर हैं। परन्तु आटे में लूंन। यह स्वेज कितना कितनी बड़ी है। बुधि में आना चाहिए ना। कितनी बड़ी दुनिया है। कितने मनुष्य हैं। यह फिर कुछ भी न रहेंगे। कोई खण्ड का नाम निशान नहीं होगा। हम स्वर्ग के मालिक बनते हैं। यह दिन रात खुशी रहनी चाहिए। नालेज तो बहुत ही सहज हैं। समझाने वाले बड़ी समज-वाज चाहिए। हेड आफिस है ना। परन्तु क्या करें म्युजियम आद खुलते रहते हैं तो कहते हैं बाबा हमको सर्विस एबुल भेजो। यहां दरवाजे पर बच्चा अच्छा है। बड़ा आज्ञाकारी है। कोई तमन्ना न है। किसको प्यार से समझा भी सकते हैं। किसको जानना भी जरूरी हैं। अनेक प्रकार की युक्तियां हैं। बाप कहते हैं मैं तुमको बहुत ही डिपलोमेट बनाता हूं। वह डिपलोमेट राजदूत को कहते हैं। तो तुम बच्चों को बुधि में यह याद रहनी चाहिए। ओ हो बेहद का बाप हमको डायरेक्शन देते हैं। तुम धारण औरों को भी बाप का परिचय देने हो। तुम्हारे सिवाय बाकी बाकी सभी नास्तिक हैं। तुम्हारे में भी नम्बरवार हैं। कोई तो नास्तिक भी हैं, बाप को याद ही नहीं करते। खुद कहते हैं बाबा हम याद भूल जाते हैं। तो नास्तिक ठहरे ना। ऐसा बाप जो साहबज़ादा बनाते हैं वह याद नहीं रहता। यह समझने में भी बड़ी विशाल बुधि चाहिए। बाप कहते हैं मैं हर 5000वर्ष बाद आता हूं। तुम्हारे द्वारा ही कार्य कराता हूं। तुम वारियर्स कितने अच्छे हो। बन्देमात्रम तुम गाये जाते हो। तुम ही पूज्य थे फिर पुजारी बने हो। अभी तुम फिर श्रीमत परपूज्य बन रहे हो तो तुम बच्चों को बड़ी ही शांति से सर्विस करनी चाहिए। अशांति न होनी चाहिए। जिनके रग2 में भूत है बाबा सभी देख रहे हैं। हरेक की चलन कैसी है। बाबा कितना नशा दिलाते हैं। बाप के साथ पूरा योग हो तो शिव बाबा की यज्ञ से तुम्हारी फर्स्ट क्लास सेवा हो। परन्तु अपने ही दुःखों में चलते, मरते रहते हैं। कोई सर्विस नहीं करते हैं। खाते ही रहते तो फिर 21 जन्म सर्विस करनी पड़ेगी। तो दास-दासियां भी बनेंगे ना। पिछाड़ी में भी सा0 होना है। दिल पर सर्विस एबुल ही चढ़ेंगे। बाबा को देखो बच्चे को एरोपलेन में भेज दिया खजाना पहुंचाने। यह सर्विस में मदद करनी होती है। (कुल भाऊ विश्व रत्न अहमदाबाद से एरोपलेन में बम्बई गये हैं बाप दादा की मुरलियां टेप आद पहुंचाने। ट्रेन का रास्ता खराब है।) रीढ बकरियां कौशर बनाना है। बन्दरों को तुम शिवालय के लायक बनाते

हो। तुम्हारी सर्विस ही यह है किसको अमरलोक का वासी बनाना। बाबा हिम्मत तो बहुत ही दिलाते हैं। धारणा करो। देह-अभिमानियों को धारणा हो न सके। तुम जानते हो बाप को याद कर हम इस वेश्यालय से उस पार शिवालय जाते हैं। तो कर के भी दिखाना है। बाबा तो चिट्ठियों में भी अभी लिखते रहते हैं लाडले रूहानी साहबज़ादो। अभी श्रीमत पर चलेंगे, महारथी बनेंगे तो शाहज़ादे जरूर बनेंगे। रूमआबजेक्ट ही यह है। एक ही सच्चा बाबा तुमको सभी बातें समझा रहे हैं। सर्विस कर औरों का कल्याण करना है। योगबल नहीं तो तो फिर इच्छायें होती हैं यह चाहिए यह चाहिए। वह खुशी नहीं है। खुशी जैसी खुराक नहीं। साहबज़ादों को तो बहुत ही खुशी रहनी चाहिए। वहन है तो अनेक प्रकार की बातें आते हैं। अरे बाप विश्व की बादशाही दे रहे हैं बाकी और क्या चाहिए। दिल में हरेक समझे हम इतने मीठे बाबा की क्या सर्विस करते हैं। बाप कहते हैं सभी को मैसेन्ज देते जाओ। साहब आया हुआ है। वास्तव में तुम सभी ब्रदर्स हो। भल कितनी भी बड़ी सभा बैठी हो तुम कहसकते हो। शिवभगवानुवाचः सभी ब्रदर्स का एक वह बाप है। सभीकहते भी हैं भाई2 हैं। परन्तु अर्थ भी समझना है ना। भाई2 को मदद करनी चाहिए। इस ख्याल से भाई कह देते हैं। यहां तो बाप कहते हैं बच्चे सभी भाई2 हो। बाप है ही स्वर्ग की स्थापना करने वाला। हेवीन बनाते हैं तुम बच्चों द्वारा। सर्विस की युक्तियां तो बाप बहुत ही समझाते हैं। मित्र-सम्बन्धियों को भी उठाना है। देखो बच्चे विलायत में हैं वह भी सर्विस कर रहे हैं। दिन प्रति दिन लोग आफतें देख फिर समझेंगे मरने पहले वरसा तो ले लेवें। अपने मित्रों को भी उठा रहे हैं। पवित्र भी रहते हैं। बाकी भाई2 की अवस्था रहे वह मुश्किल है। वह अवस्था तो होनी ही है पिछाड़ी को। बाप तो अभी साहबज़ादों का टाईटल कितना अच्छा दिया है। अपन को देखना चाहिए सर्विस न करेंगे तो हम क्या बनेंगे। अगर कोई ने जमा किया है और सर्विस नहीं करते हैं तो वह तो सभी खाकर खलास कर दिया। सर्विस भी करते रहे तो कुछ जमा हो। जो जमा किया वह खाते2 चुकुत हो गया। और ही उनके खातेर चढ़ता है। सर्विस करने वालों को कब यह ख्याल भी न आये कि हमने इतना दिया है उन से हम खाते हैं। सर्विस नहीं करते तो वह क्या बनेंगे। यहां तो बच्चे आते हैं उन से सभी को प्रवारस होता है। इसलिए मदद करने वालों की खातरी भी की जाती है। समझना चाहिए वह खिलाने वाले हैं। तुम उनकी सेवा करते हो। यह भल हिसाब-किताब है। मनसा वाचा कर्मणा उन्हीं की सर्विस ही नहीं करेंगे तो वह खुशीकैसे होंगी। शिव बाबा को याद कर भोजन बनाते हैं तो उसकी ताकत मिलेगी। दिल से पूछना चाहिए हम क्या2 करते हैं। सभी को राज़ी करते हैं। महारथी बच्चे कितने सर्विस कर रहे हैं। बाबा रेगजीन पर चित्र बनाने की भी कोशिश कर रहे हैं। जो कब टूटे-फूटे नहीं। कहां भी ले जा सकते हैं। बाबा के बच्चे बैठे हैं देखेंगे इतने चित्र बन रहे हैं आपे ही भेज देंगे निराकार बाप फिर पैसे कहां से लावेंगे। यह सभी सेन्टर्स कैसे चलती हैं। बच्चे ही चलाते हैं ना। शिव बाबा कहते हैं मेरे पास तो एक कौड़ी भी नहीं। आगे चल तुमको आपे ही कहेंगे हमारा मकान तुम काम में लगाओ। तुम कहेंगे अभी टू लेट। बाप है ही गरीब निवाज़। गरीबों पास पैसे कहां से आये। कोई तो करोड़पति पदमपति भी हैं। 50-100करोड़ भी कोई2 पास है। उन्हों के लिए यहां ही स्वर्ग है। यह है माया की पाम्प। उनका पतन हो रहा है। स्वर्ग को सतयुग कहा जाता है। कलियुग में फिर स्वर्ग कहां से आया। इतना दुःख अशान्ति, आपघात करते रहते हैं, उनको स्वर्ग कहां जावेगा? बाप कहते हैं तुम पहले हमराज़ादे थे। फिर साहबज़ादे बने हो। फिर साहबज़ादे से शाहज़ादे जाकर बनेंगे। परन्तु इतनी सर्विस भी कर के दिखाओ ना। बहुत ही खुशी में रहना चाहिए। हम साहबज़ादे हैं, फिर शाहज़ादे बनने वाले हैं। शाहज़ादे तब बनेंगे जब कि बहुतों की सर्विस करेंगे। कितना खुशी का पारा चढ़ना चाहिए। अच्छा। मीठे2 सिकीलधे बच्चों को रूहानी बाप दादा का याद प्यार गुडमार्निंग। मीठे2 साहबज़ादों प्रति साहब की नमस्ते।

*-:*शिव बाबा याद है*:-*